शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

वेद-पुराणकालीन युद्ध कला

दिनेश एस.चौधरी सहायक प्राध्यापक
इतिहास, संरक्षण विभाग
एम.एम.चौधरी आर्ट्स कालेज
राजेंद्र नगर, गुजरात, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र में वेद और पुराणकालीन युद्ध कला पर विचार किया गया है। विद्वानों में इस बारे में प्राप्त मतभेद हैं कि आर्य भारत के रहने वाले थे अथवा भारत के बाहर से आये थे। लेकिन वेद अथवा पुराणों में इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं कि वे युद्ध कला से परिचित थे। उनके पास युद्ध करने के लिए प्रारम्भिक हथियार थे। इससे वे शत्रु दल पर विजय प्राप्त करते थे।

प्रस्तावना

सिंधु घाटी सभ्यता की अंतिम किरण वैदिक काल की ऊषा की प्रथम किरण के रूप में परिणित हो गई, क्योंकि इसी के साथ उत्तर-पश्चिम के चरवाहे की टोलियां आर्य रूप में भारत में पदार्पण करने लगीं। आर्यों के मूल निवास के संबंध में विद्वान आज तक एकमत नहीं हैं, फिर भी अधिकांश विद्वान उन्हें कैस्पियन सागर के समीप का मानते हैं, जहां से वे दल के रूप में भारत आए।

छोटी-छोटी टोलियों में विभक्त आर्यों को अपने स्थायी अस्तित्व हेतु भारत में पहले से बसे अनार्यों से संघर्ष करना पड़ा। इस प्रकार वैदिक काल वस्तुतः भारत में आर्यों के पदार्पण, उनकी बसाहट एवं प्रसार तथा यहां के निवासी अनार्यों के साथ युद्ध का काल रहा है। इन युद्धों की स्पष्ट झलक हमें ऋग्वेद में स्थान-स्थान पर देखने को मिलती है। पश्चिमी विद्वान भारत में इस काल की कुल अवधि लगभग 900 वर्ष (1500 ई.पूर्व से 600 ई.पूर्व) मानते हैं।

सैन्य संगठन

वैदिक काल के आर्य राजाओं की कोई निश्चित स्थायी सेना नहीं होती थी, अपितु युद्ध काल में उन्हें अपने अधीन क्षेत्रीय सरदारों पर निर्भर रहना पड़ता था। जिनके नेतृत्व में लड़ने वाले दल अपने-अपने हथियारों को लेकर युद्ध क्षेत्र में एकत्र हो जाते थे।

सेनांग

वैदिक कालीन आर्यों की सेना (जिसे ऋग्वेद में चृत या चृतवा के नाम से संबोधित किया गया है) के प्रमुख रूप से दो अंग थे 1 पैदल सेना अथवा पति सेना 2 रथि सेना।

ऋग्वेद में हाथियों को जंगली जानवर माना गया है और इसलिए युद्ध में उनका प्रयोग नहीं होता था। आश्व सेना, गजसेना का प्रयोग वैदिक काल की समाप्ति के समय ही संभव हो सका। इस कारण वैदिक काल में पैदल और रथी सैनिक ही युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे। 'ऐतरेय ब्राह्मण' में रथों के महत्व का उल्लेख कई स्थानों पर किया गया है। श्री रामगोविंद त्रिवेदी के

ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

अनुसार इन रथों में आठ व्यक्तियों के बैठने की जगह होती थी और इनमें 6-6 घोड़े जुते होते थे। जहां तक सेना के आकार का संबंध है, किसी निश्चित संख्या का उल्लेख नहीं मिलता है तथापि सेनाओं का आकार विशाल होता था। सामान्यतः सैन्य संख्या 30 हजार से 60 हजार के बीच रहती थी। यद्यपि कहीं-कहीं अपवाद स्वरूप इससे भी अधिक सैन्य संख्या का उल्लेख मिलता है। उदाहरणार्थ दशराज्ञ युद्ध में मारे जाने वालों की संख्या 66066 बताई गई है। इस काल के भारतीयों को सामुद्रिक परिभ्रमण का भी ज्ञान था, किंतु व्यापारिक नौकाओं को छोड़कर किसी भी प्रकार के 'लड़ाकू जहाजों' अथवा युद्ध हेतु स्थायी नौकाओं का उल्लेख नहीं मिलता है।

सैन्य प्रशिक्षण

स्थायी सेना के अभाव के कारण इस काल में सैन्य प्रशिक्षण की राजकीय व्यवस्था नहीं थी, किंतु शस्त्र, शास्त्र, दण्डनीति में पारंगत ब्राह्मणों द्वारा अपने व्यक्तिगत विद्यालय खोलने का उल्लेख मिलता है। क्षत्रिय युवकों को क्षात्र धर्म की शिक्षा-दीक्षा देने के साथ ही ब्राह्मण युद्ध क्षेत्र में राजा को उचित सलाह देता था और मंत्रों द्वारा ही उसकी विजय की कामना करता था।

शस्त्रास्त्र

वैदिक काल के हथियारों का स्पष्ट नामकरण कठिन है तथापि धनुष और बाण इस काल के प्रमुख हथियार थे। इसके साथ ही साथ भाला, बल्लम (सुक, तलवार, असि) दीघु और अशनी, मुग्दर और छुरा आदि हथियार युद्ध में प्रयुक्त होते थे। अथर्ववेद में शत्रु को परेशान करने एवं घबराहट डालने के लिए विशेष प्रकार के जाल और फन्दों का भी उल्लेखन मिलता है। सुरक्षात्मक हथियारों में एक बड़ा-सा टोप और ढाल होती थी जो संभवतः चमड़े के बने होते थे। वैदिककालीन आर्य युद्ध में झण्डों का भी प्रयोग करते थे। ऋग्वेद में 'ध्वज' शब्द का दो बार प्रयोग इसका प्रमाण है। कुछ युद्ध वाद्यों का भी उल्लेख मिलता है, जिसमें दुंदुभि, क्रंद, घौसा आदि प्रमुख थे। वैदिककालीन शस्त्रास्त्र मुख्यतः कांसे और तांबे के बनते थे।

दुर्ग एवं आयुधागार

संभवतः वैदिककालीन आर्यों के पास अपने दुर्ग नहीं थे, लेकिन अनार्यों द्वारा अपनी सुरक्षा हेतु निर्मित दुर्गों पर आधिपत्य स्थापित कर उनकी दषा को सुधार कर उनका भरपूर उपयोग किया गया। वे दुर्ग पत्थर अथव ईटों के बने और संभवतः विषाल थे। ऋग्वेद में एक स्थान पर 'लोहपुरी' का भी वर्णन मिलता है।

युद्धों के कारण, प्रकार एवं नियम

वेद एवं पुराणकाल में युद्ध कारणों में यश प्राप्ति की लालसा, स्त्रीहरण तथा भूमि एवं सम्पत्ति का वितरण आदि प्रमुख थे। क्षेत्र विस्तार एवं यश प्राप्ति हेतु लड़ना और मरना मात्र ही तत्कालीन क्षत्रियों का उद्देश्य बन गया था। युद्ध मुख्यतः दो प्रकार के थे: धर्म युद्ध और कूट युद्ध। धर्म युद्ध कुछ निश्चित नियमों के अनुसार होते थे, जिनका पालन प्रत्येक सैनिक करता था - प्रमुख सैन्य नियम निम्नलिखित थे:

1 युद्ध से पूर्व सूचनार्थ दूत प्रेषण और अधीनता स्वीकार करने पर युद्ध न करना चाहिए।

2 कवचधारी योद्धा को कवचहीन से युद्ध नहीं करना चाहिए।

3 समान पद वाले से ही संग्राम करना चाहिए अश्वारोही को रथी से युद्ध नहीं करना चाहिए।

ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

4 विषयुक्त और कांटेदार बाणों का प्रयोग नहीं करना चाहिए और न ही असहाय और पददलित को बाण से मारना चाहिए।

5 भय से त्रस्त, युद्ध विमुख एवं दर्षकों आदि को नहीं मारना चाहिए।

6 शरणागत को अभयदान देना चाहिए और शस्त्रहीन, ब्राह्मण तथा स्त्री पर प्रहार नहीं करना चाहिए।

7 कैदियों, बीमार और घायलों के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए।

8 सूर्योदय के साथ युद्ध आरंभ और सूर्यास्त के साथ युद्ध बंद हो जाना चाहिए।

9 कमर से नीचे प्रहार वर्जित था।

10 राजा, राज से ही युद्ध करता था।

इसके विपरीत कूट युद्ध का उद्देश्य छल-बल द्वारा शत्रु को पराजित करना अथवा मारना होता था। और इसलिए इस प्रकार के युद्ध में उपर्युक्त नियमों का पालन नहीं होता था। उदाहरण के लिए शस्त्रहीन अभिमन्यु का शस्त्रप्रहार द्वारा वध एवं दुर्योधन की जंघा पर भीम द्वारा गदा प्रहार कर वध अवैध धर्म विरुद्ध था तथापि इस काल में धर्म युद्धों का ही बाहुल्य परिलक्षित होता है।

सैन्य प्रशिक्षण

स्थायी एवं नियमित सेना का बीजारोपण हो जाने के कारण महाकाव्य एवं पुराणकाल में सैनिकों के प्रशिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया गया। आश्रम एवं ग्रामीण पाठशालाएं शिक्षा के केंद्र स्थल थे। 'आदिपर्व' में एक ऐसे विश्वविद्यालय का उल्लेख मिलता है जो नगर से दूर वन में था। जिसमें नवयुवक अन्य विषयों की शिक्षा के साथ ही सैन्य विज्ञान की शिक्षा भी प्राप्त करते थे। क्षत्रिय बालकों के लिए 16 वर्ष की आयु तक सैन्य शिक्षा प्राप्त कर लेना आवश्यक था।

चर एवं दूत प्रथा

आधुनिक काल की जासूसी का प्रारंभ वेद एवं पुराण काल में ही हो गया था। शांति एवं युद्ध दोनों ही समय में शत्रु विषयक सूचनाएं प्राप्त करने के लिए नागरिक एवं सैनिक दूतों एवं गुप्तचरों के प्रयोग के प्रमाण मिलते हैं। रावण ने राम की शक्ति का पता लगाने और दुर्योधन ने विराट के यहां रहने वाले पाण्डवों का पता लगाने के लिए गुप्तचरों का प्रयोग किया था। दुर्योधन के गुप्तचर तो आसपास की सूचनाएं राजा तक पहुंचाने में सदैव व्यस्त रहते थे और दुःशासन अपने इन विश्वासी गुप्तचरों को अग्रिम धन देता था। इस प्रकार गुप्तचरों के कार्य को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

धर्मयुद्धों की प्रमुखता होने के कारण युद्ध से पूर्व दूत प्रेषण की भी प्रथा थी। राम द्वारा अंगद को लंका भेजना इसका प्रमाण है। महाभारत में भीष्म इन दूतों एवं गुप्तचरों के आवश्यक गुणों एवं उपयोगों आदि का विस्तार से उल्लेख किया गया है। इन दूतों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाता था। महाभारत के शांतिपर्व (85/26) के अनुसार जो राजा दूसरे राजा के दूत का वध करता है वह अपने मंत्रियों सहित नरक में जाता है। इस प्रकार दूत की रक्षा एवं अनुकूल पद्धति अपनायी जाती थी। दूत की रक्षा भी धार्मिक कार्य समझा जाता था।

जलयान तथा वायुयान का उपयोग

वैदिक एवं पुराणकालीन सैन्य पद्धति के विकास का एक प्रमाण इस काल में प्रयुक्त होने वाले जलयान और वायुयान भी हैं। इस काल में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जबकि यातायात के

ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

साधन के रूप में इनका प्रयोग किया गया। महाभारत के शांति पर्व (59/41) में जल सेना को सेना का एक आवश्यक अंग भी बतलाया गया है। आदि पर्व (अध्याय 143) में विदुर द्वारा कुंती के पांचों पुत्रों को खतरे से बचाने के लिए एक सशस्त्र नौका द्वारा उसकी मां सहित जंगल की ओर प्रस्थान का वर्णन मिलता है। इसी प्रकार सभापर्व (अध्याय 31) के दिग्विजय के वर्णन में सहदेव द्वारा समुद्र पार म्लेच्छों को हराने का उदाहरण भी संभवतः जलयानों के अभाव में संभव नहीं है। इसी प्रकार रामायण के युद्ध काण्ड में (सूत्र 8 श्लोक 8) दुर्मुख नामक राक्षस द्वारा रावण की समुद्र पार की सहायता का प्रस्ताव भी यह प्रमाणित करता है कि इस काल में जलयानों का प्रयोग युद्ध में किया जाता था। इसी प्रकार इस काल में वायुयानों के प्रयोग के भी कई उल्लेख हैं। महाभारत में वन पर्व (अध्याय 172) में अर्जुन और निपात कवच नामक असुर के युद्ध तथा द्रोण पर्व (अध्याय 175-50) में कर्ण और रान्धक के युद्ध में आकाश मार्ग से अनेक शस्त्रास्त्र गिराने का वर्णन है।

निष्कर्ष

इसी प्रकार अनेक स्थलों पर विष्णु के प्रमुख वाहन गरुड़ का उल्लेख है। रामायण काल में रावण द्वारा वायु मार्ग से सीता का हरण तथा लंकाविजय के बाद राम का लक्ष्मण और सीता सहित पुष्पक विमान से अयोध्या लौटना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि इस काल में वायुयान की तरह का कोई यान अवश्य रहा होगा। इसमें संदेह नहीं कि रामायण और महाभारत काल में प्रयुक्त सैन्य साधन उच्च कोटि के थे और इस काल की सैन्य पद्धति उससे पूर्ववर्ती कालों की तुलना में पर्याप्त विकसित थी। महाभारत काल में जिन अस्त्र-शस्त्रों की जानकारी मिलती है वह अति उन्नत किस्म के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1 The military system in ancient India, B.K. Mujumdar, p-3

2 Before History begun murderous strife universal and unending, Winston S.Churchil : Thoughts and Adventures

3 Man's First contact with Nature arose from the need of getting food and this often involved fighting, Colonel Donald Portway : Military system today, p-13

4 भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास, सत्यकेतु विद्यालंकार, पृष्ठ 84

5 Pre-Historic civilization, pp- 31.31

6 हिन्दी ऋग्वेद, 794/14, रामगोविंद त्रिवेदी

7 हिन्दी ऋग्वेद, 320/8, रामागोविंद त्रिवेदी

8 हिंदू सभ्यता राधाकुमुद मुकर्जी, पृष्ठ 123

9 Art of War in Ancient India, Dr.Chakravarty , pp-150-186